हादसात, हालात और मुसीबते

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

●हादसात एक कसौटी हे

किस कदर पाकीजा हे वो जात जो अपने बन्दों को उन्के वतन से दूर करके और अस्बाब के सामने जुका कर उनका सबर आजमाती हे और आज्माइश के जमाने मे उन्के जोहर को जाहिर करती हे.

देखो हजरत नूह (अलै) अपनी कौम से मार खाते हुवे बेहोश हो जाते हे फिर कुछ दिनो के बाद कश्ती मे बैठ कर नजात पा रहे हे और उन्के दुश्मन हलाक हो रहे हे, हजरत इब्राहीम (अलै) आग मे डाले जा रहे हे और कुछ ही देर के बाद सलामती के साथ निकाले जा रहे हे, हजरत इस्माइल (अलै) अल्लाह के हुक्म के सामने जुक कर जबह के लिये लिटाये जा रहे हे, फिर बचा लिये जा रहे हे, हजरत याकूब (अलै) की निगाह हजरत युसफ (अलै) की जुदाई मे खत्म हो गयी फिर मिलने के जरीया वापिस भी आ गयी,

हजरत मूसा (अलै) बकरीया चरा रहे हे और फिर तरक्की करके अल्लाह से बातचीत से मुशर्रफ हो रहे हे, और हमारे नबी करीम صلى الله عليه وسلم को कल तक यतीम कहा जा रहा था अजीब अजीब हालात आपको उलट पलट रहे हे जो कभी दुश्मनो से पोहचते थे और कभी और तरह से लेकिन नबी करीम صلى الله عليه وسلم तो हिरा पहाड से भी ज्यादा साबित कदम हे.

फिर देखो फतह मक्का के ज़रिये नबी करीम ﷺ की मुराद हासिल हो रही हे और नबी करीम صلى الله عليه وسلم बडे बडे बादशाहो और हुकमरानो को अपना लाया हुवा दीन पहूचा रहे हे, फिर देखो नबी करीम صلى الله عليه وسلم को ले जाने वाला मेहमान, मलेकुल मौत आ जाता हे और तकलीफ की सख्ती से पुकार रहे हे, हाय तकलीफ की सख्ती, तो जिस शख्स ने दुन्या के समन्दर मे गौर किया और ये मालूम कर लिया कि मौजे आपस मे किस तरह मिलती हे और जमाना के धक्को पर कैसे सबर किया जाता हे वह किसी बला और मुसीबत के नाजिल होने से घबरा नही गया और किसी दुनयवी राहत पर ज्यादा खुश नही होगा.

●हालात की किस्मे

हालात दो किसम के होते हे, नेमत और मुसीबत, नेमत से खुशी होती हे, और खुशी की वजह से इनाम

देने वाले के साथ मोहब्बत हो जाती हे.

जब कि मुसीबत से बुरा महसूस होता हे, और मुसीबत कहते वो हालत जो नफस को नापसद हो.

मुसीबत की दो किस्मे हे, एक मुसीबत की सुरत, और एक हिकीकी मुसीबत.

जिस मुसीबत से घुटन और परेशानी बढे वो तो गुनाहो की वजह से हे, और हकीकत मे यही मुसीबत हे.

और जिस मुसीबत और परेशानी से अल्लाह के ताल्लुक मे जियादती हो, अल्लाह की इताअत और रजामंदी ज्यादा हो, हकीकत मे वो मुसीबत, मुसीबत नही हे, चाहे उसकी सुरत मुसीबत की हो.

●मुसीबतो की किस्मे

हजरत शेख अब्दुल कादिर जीलानी (रह) फरमाते हे मुसीबतो की तीन हालते हे, कुछ हालतो मे वो अजाब और अल्लाह का गुस्सा होते हे, और कुछ हालतो मे वो गुनाहो का काफ्फारा, और कुछ मे वो दरजात की बुलन्दी, और यही पहचान हर एक की हे.

अगर मुसीबत की वजह से आदमी अल्लाह की तकदीर पर नाराजगी और उस्से शिकायत हो, तो ये निशानी हे अल्लाह के गुस्से, नाराजगी और उस्के

अजाब की.

और अगर ये सुरत ना हो, बल्के उसपर सबर करे तो ये निशानी हे गुनाहो के कफ्फारे की

और अगर सबर के साथ अल्लाह के फेस्ले पर रजामंदी और दिल मे खुशी महसूस करे तो ये निशानी हे दरजात की बुलन्दी की.

इससे मालुम हुवा कि नबीयो और वलीयो की मुसीबते तीसरी किसम की हे,

और आम मोमीनो की दूसरी किसम की,

और पहली किसम अक्सर काफीरो का हाल होता हे.

अल्लाह हर मुसल्मान को इससे मेहफुज रखे, आमीन.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.